मिस्र देश

बाइबल में उत्पत्ति से लेकर मत्ती तक अर्थात इब्राहीम से लेकर प्रभु यीशू मसीह तक मिस्र के उल्लेख मिलते हैं। बाइबल स्पष्ट करती है कि परमेश्वर की दृष्टि में मिस्र का महत्व था। जैसे (१) अकाल पड़ने पर इब्राहीम मिस्र देश को चला गया। (२) अकाल पड़ने पर याकूब ओर उसके पुत्र मिस्र में रहे। (३) परमेश्वर की प्रतिज्ञा के अनुसार इस्राएली ४०० वर्षों तक पराये देश में रहे। (४) मूसा का उत्थान मिस्र से हुआ। (५) प्रभु के दूत ने यूसुफ से कहा, यीशू और उसकी माता को लेकर मिस्र देश को भाग जा।

उपरोक्त तथ्यों से स्पष्ट होता है कि जब-जब इस्राएल पर संकट आया तब-तब परमेश्वर की इच्छानुसार इस्राएलिओं ने मिस्र का सहारा लिया। अतः परमेश्वर की दृष्टि में मिस्र का महत्व सिद्ध होता है।

मिस्र, उत्तरपूर्वी अफ्रीका एवं दक्षिणपश्चिमी एशिया के बीच स्थित है। मिस्त्र ई. पू. ४५०० से संसार में सभ्यता के महान् केन्द्रों में से एक है। अधिकांश मिस्री लोग देश के दो मुख्य क्षेत्रों में रहते थे। पहला क्षेत्र नील नदी के किनारे की उपजाऊ पट्टी का था जो कि मिस्र के दक्षिणी से उत्तरी भाग में ८०० मील तक फैला हुआ था। दूसरा मुख्य क्षेत्र नदी के दूरस्थ उत्तरी अन्त का है जहां यह घाटी के पार तक फैला था, यह घाटी सौ मील से अधिक चौड़ी थी। इस क्षेत्र को नील नदी का डेल्टा कहा जाता है। केन्द्रीय अफ्रीका में होने वाली भारी वर्षा के कारण प्रत्येक वर्ष नील नदी में बाढ़ आती थी। इस कारण मिस्र में किसान अनाज की उत्तम फसल उगाने के लिये, इस जल पर निर्भर रहते थे। प्राचीन काल में जब पलस्तीन और सीरिया में वर्षा कम होती थी, तब लोग मिस्र की ओर कूच कर जाते थे, जहां से उन्हें भोजन की आपूर्ति हो जाती थी।

आज तक मिस्त्र के कुछ मकबरे सुरक्षित हैं। इनमें से कई को पिरामिड के रूप में जाना जाता है। १८वीं सदी में नेपोलियन के काल में फ्रांसीसी विद्वानों ने पत्थर की पटिया खोज निकाली जिसे ''रोसेट्टा स्टोन'' कहा गया। इस पर एक ही अनुच्छेद खुदा है, जिसे तीन भाषाओं में जिसमें मिस्री एवं यूनानी सहित, दोहराया गया है। विद्वानों के यूनानी ज्ञान ने मिस्री लेख की गूढ़लिपि का अर्थ निकालना संभव बनाया, और इसका उपयोग उन्होंने प्राचीन मिस्री पाण्डुलिपियों एवं शिलालेखों के अनुवाद के लिये किया। इन शिलालेखों ने ही मिस्र के महान राजवंशीय इतिहास और संस्कृति को उजागर किया है।